।। श्री अवलिया चालीसा।।

।। श्री स्वामी समर्थ।।
ॐ बं बं ॐ बं बं ॐ बं बं शिव बोले स्वामी बोले।
भाग्य का ताला झटसे खोले।
चटकी पे मटकी, मटकी पे लटकी।
लटकी को करे फुंक।
समझलो मन को।
ना रहे कोई चुक।
स्वामी दिखावे गोल घुमट का प्याला।
उसमे खेले सतरंगी खेल निराला।
सातो रंग जाके मिले आकाश।
विरल होके करे प्रकाश।
सूची सोच, सोच की मोच, मोच में रहे पाताल।
पाताल संभाले नौ रत्न का भांडार।
आकाश पाताल मे किया भूलोक का साचा।
भूलोक पे किया बारा ज्योती का श्रींगार।
नर बने ढोल, नारी बने नर्तकी।
खुलाकर फुलाकर सुलाकर और झुलाकर।
स्वामी की सोच।
सोच की मौज, मौज बनावे पुरुष प्रकृती।
इस अंतराल में नवग्रहों का लगा है मेला।
मेले मे नक्षत्र तिथी करण देखे खेल।
नर नारी बन के भोला।
जैसे हो डोला और थैला।

करके कमाल, सुझावे धमाल।
बिजली चमके बुझावे अंधार।
समुंदर की लहरे झुलावे बारंबार।
आनंद मे डुबे स्वामी लगा वे बेडा पार।
उस पर अवलिया ने भगत को किया कृपार।
ॐ माया को छोडे कर के पाष।
पाष में करे दुनिया से भाष।
भाष से खिले सुंदर फुल।
फुल से खिले सुंदर मन।
मन ही तो है संसार का धन।
ॐ स्वाः
ॐ अं आं इं ईं उं ऊं ऋं लृं एं ऐ ओं औं अं अः
कं खं गं घं ङं चं छं जं झं ञं
टं ठं डं ढं णं तं थं दं धं नं पं फं बं भं मं
यं रं लं वं शं षं सं हं ळं क्षं ज्ञं
योगी योगी बनखंड का बासा।
श्रीगुरुदत्त स्वामी जगत मे खासा।।१।।
लेके अवतार चौथा परब्रह्म अवतारा।
कहे अवलीया स्वामी सुंदर रुप का तारा।।२।।
फुके चिलीम खोकला रहे फुंकारा।
सुगंधी धुम माया मे संचारा।।३।।
श्रीरामचंद्र को जैसे सीता है प्यारी।
वैसे भक्त के मन पे करे सवारी।।४।।
हे अवलिया मार के थाप बनावे रतन।

पत्थर के जीवन को करावे भावन।।५।।
नवनाथ चले उस अवलिया के संग।
चमत्कार करके जान को करे दंग।।६।।
लेके शाबरी माला मारे फुंकर।
कठनाई वाला काम बनावे सुकर।।७।।
धारण करे कमंडलू बाए हाथ में।
संसार संजीवन बुटी समाई उसमे।।८।।
भूतप्रेत का बजता रहे नगारा।
चिमटे की धाक से होवे बंजारा।।९।।
जादू की मलाई टोना की मिठाई।
खाके अवलियाने डकार लगाई।।१०।।
ॐ क्लिम् श्रीस्वामी समर्थाय नमः।
मंत्र जाप ने बुरी नजर को झट से मारा।।११।।
ॐ श्रीमहालक्ष्मी माय स्वामी समर्थाय नमः।
मंत्र जाप ने किया धन का फवारा।।१२।।
शिव रुपी मटका जिस में शक्ति रुपी मख्खन।
कृष्णरुपी अवलिया खिला वे सार के ढक्कन।।१३।।
वास कर के गोपालों के संग कृष्ण सुखाया।
वैसे रुप मे अवलिया को भक्त ने पाया।।१४।।
नदी डोल के अपनी मस्ती सागर मे मिले।
सुख देके भक्तन का जीवन खिले।।१५।।
त्रिशूल के धाक से भूतों को धमकाया।
दूर करने रोगों को अवलिया ने डमरु बजाया।।१६।।
चक्र ने चक्रीत किया दुख को।

चक्र घुमा के चक्र से मारे बुरी नजर को।।१७।।
घुमके चक्र सारे जगत को फेरा लगाया।
अवलिया ने अपनी उंगली पे स्थिर कराया।।१८।।
धारण करे गले में रुद्राक्ष की माला।
स्वामी अवलिया ने गिरने से संभाला।।१९।।
जैसे मधुमख्खी चुसे अमृत फुलों का।
भ्रमर सोए ओढके चादर कमल दलों का।।२०।।
वैसे अवलिया साधू पिवे दुख भगतका।
खोले लक्ष्मी भांडार नाश करे दारिद्र्य ऋण का।।२१।।
जागृत हुए गोल घुमट पहुंचे दसवे द्वार।
इहलोक में दिखा वे परलोक का भार।।२२।।
धारण करे भस्म को लेके माई की आन।
चमका के बिजली दिखा वे भक्ती की भान।।२३।।
टिमटिम करे जुगनू फैला के प्रकाश।
अवलिया साधू दूर करे माया जाल का पाश।।२४।।
अवलिया की कृपा से पहाड चढावे तीन कदम।
समुंदर तैरा के मिटावे सारे गम।।२५।।
उड्डाण करा के हवा में दिखावे चमत्कार।
पानी पर चला के दुर करे माया का बुखार।।२६।।
अवलिया साधू फैलावे छत्र की छाया।
सुखी करे इस भगत को तेरा ही साया।।२७।।
गूटका करे भक्ती का पान करे शक्ती का।
चबावे माया को दर्शन देके शिव का।।२८।।
उंगली पकडे तुम्हारी ये अनाथ।

न छोडे कभी हे नाथो के नाथ।।२९।।
पंचदीप नचाके सुलादे गमके अंधेरे को।
अवलिया शक्ती बुझावे अघोरी फेरे को।।३०।।
अवलिया ने दिया ग्यारह रुपय्या।
नाश करे भोगन को सच है मय्या।।३१।।
एक रुपय्या की देखे कमाल।
रोके कामको उडे धमाल।।३२।।
दुसरा खातमा कर क्रोध का।
लोभ को डाले तिसरा पैका।।३३।।
मोहको करे लाचार चौथा रुपय्या।
मदको मारे यह पाचवे ने फरमाया।।३४।।
मत्सर जैसे जहर आपस में करें बैर।
उसे मार के छटा करावे शांती की सैर।।३५।।
अगले पांच मारे चंचल आदि विकार।
समृद्धी देके करे जीवन रुपी साकार।३६।।
अवलिया तुम्हारी हो जय जय कार।
मोहे मन को मिट्टीको दे आकार।।३७।।
न छोडे सदा रहे मेरे साथ।
"भिऊ नकोस मी पाठीशी आहे" ऐसे मारे हाक।।३८।।
जय जय स्वामी जय जय अवलिया।
तेरे दरबार में भक्ती का दिया जलाया।।३९।।
तेरे ज्ञान से जग में हुए उजाला।
मुढी को सुधारे तुही सबका रखवाला।।४०।।